RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 11 01-15 जून 2026

हिन्दू विरासत पर कब्जा

सम्पादकीय

जनसंख्या असन्तुलन की पड़ताल

देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या के असन्तुलन की पड़ताल के लिये केन्द्र सरकार द्वारा एक उच्चाधिकार समिति के गठन की घोषणा और उसके द्वारा वर्ष भर में ही रिपोर्ट सौंपने की बात बहुत महत्वपूर्ण और स्वागत योग्य है। इससे न सिर्फ भारत की सीमाओं की सुरक्षा मजबूत होगी अपितु घुसपैठ व अवैध धर्मान्तरण से हो रहे अनावश्यक आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक आक्रमणों तथा आन्तरिक सुरक्षा को आ रही चुनौतियों से जुड़े आंकड़े भी खुलकर बाहर आ सकेंगे। बांग्लादेश और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों से होने वाली घुसपैठ के कारण असम, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, बिहार और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में धार्मिक आधार पर जनसंख्या का सन्तुलन बुरी तरह बिगड़ गया। ये मुस्लिम घुसपैठिये यहाँ से निकलकर पूरे भारत में फैल गये हैं। आज देश का ऐसा कोई राज्य नहीं है, जहाँ इनकी अच्छी खासी आबादी न हो।

वैसे तो घुसपैठ के कोई आधिकारिक आँकड़े नहीं हैं लेकिन एक अनुमान के अनुसार इनकी संख्या पाँच से 10 करोड़ तक हो सकती है। यानी कई बड़े-बड़े देशों की कुल जनसंख्या से अधिक हमारे यहाँ मुस्लिम घुसपैठिये रह रहे हैं। ये हमारे शत्रु हैं जो देश को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे हैं और देश की एकता-अखण्डता के लिए गम्भीर खतरा हैं। इनके कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, बेरोजगारी, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण प्रदूषण जैसी गम्भीर समस्याएँ पैदा हो रही हैं। साथ ही साथ ये लोग आपराधिक घटनाओं में तेजी से सम्मिलित होने लगे हैं। सबसे बड़ी बात है कि इनको हमारे ही देश के गद्दार समर्थन दे रहे हैं। भारत की सीमा में प्रवेश से पहले ही इनका नेटवर्क काम करना आरम्भ कर देता है। ये कहाँ से सीमा पार करेंगे, उसके बाद इनको कहाँ रखा जायेगा, फिर भारत के किस भाग में भेजा जायेगा, फिर कहाँ से इनका आधार, मतदाता पहचान पत्र आदि बनेगा, सब कुछ पूर्व निर्धारित रहता है। मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग इनके स्वागत को तैयार रहता है और इनकी हर सम्भव सहायता करता है। वहीं मुस्लिम तुष्टीकरण वाले दलों के लिये भी ये लोग वोट बैंक के रूप में काम करते हैं। इसीलिये भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर कोई भी दल यह मुद्दा नहीं उठाता। देश में जहाँ जनसांख्यिकी में परिवर्तन हुआ है, वहाँ की मतदाता सूची में भी बड़ा बदलाव आया है।

पश्चिम बंगाल इसका ताजा उदाहरण है। वहाँ नयी सरकार बनते ही बहुत से घुसपैठिये वापस बांग्लादेश जाने में लगे हैं लेकिन इनकी संख्या बहुत ही कम है क्योंकि अधिकांश ने भारत में आकर फर्जी ढंग से सभी आवश्यक सरकारी प्रपत्र बनवा लिये हैं और इन्हें न निकाले जाने का विश्वास है। राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से जनसांख्यिकीय परिवर्तन का प्रश्न अत्यधिक संवेदनशील है। जब बड़ी संख्या में लोग बिना वैध प्रपत्रों के किसी देश में प्रवेश करते हैं तो सुरक्षा एजेंसियों के समक्ष पहचान और सत्यापन की गम्भीर चुनौती उत्पन्न हो जाती है। अवैध घुसपैठ केवल आर्थिक कारणों ही नहीं, बल्कि आतंकवाद, चरमपंथ, मानव तस्करी तथा अन्य संगठित अपराधों को घटित करने के लिये भी होती है। खतरनाक ढंग से हो रहे जनसांख्यिकीय परिवर्तन को रोकने के लिये फर्जी पहचान पत्र के तंत्र को समाप्त करना होगा, जो पूरे देश में काम कर रहा है। इसमें लिप्त लोगों के लिये जब तक अत्यधिक कड़ी सजा का प्राविधान नहीं होगा तब तक इनके मन में डर नहीं होगा। आज देश का वास्तविक नागरिक जन्म प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, वोटरकार्ड, राशनकार्ड और पासपोर्ट के लिये कार्यालयों के धक्के खाता है लेकिन अवैध घुसपैठियों को ये सभी सरकारी प्रपत्र बहुत आसानी से उपलब्ध हो जा रहे हैं। इसलिये सरकार को ध्यान रखना होगा कि यह समिति केवल खानापूर्ति का माध्यम

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 **अंक** : 11

RNI. No. UPHIN/2015/65982

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

सम्पादक
शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल
डॉ. अनूप आनन्द
सुरेश सिंह
विवेक रॉय
मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय
संस्कृति भवन
राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल
avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नग्र लखनऊ दूरभाष +91-6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

Scan & Subscribe

अनुक्रम

हिन्दू विरासत पर कब्ज़ा 04

भारतीय शास्त्रों में पर्यावरण 06

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज 08

स्क्रीन टाइम, सुविधा से निर्भरता तक और ... 10

सामाजिक बिखराव से जूझते पश्चिमी देश 12

वैश्विक उथल-पुथल में भी स्थिर ग्रामीण... 13

एसआईआर प्रक्रिया संविधान के अनुरूप 14

ग्रीष्म ऋतु में आयुर्वेद अनुसार बचाव 16

वैदिक पेंट : स्वस्थ जीवन और स्वच्छ ... 17

सुभाषित

चिन्तनीया हि विपदां आदावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्त वान्हिना गृहे॥

जिस प्रकार से घर में आग लग जाने पर कुँआ खोदना आरम्भ करना युक्तिपूर्ण (सही) कार्य नहीं है उसी प्रकार से विपत्ति के आ जाने पर चिन्तित होना भी उपयुक्त कार्य नहीं है। (किसी भी प्रकार की विपत्ति से निबटने के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये।)

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या	: 02510210002360
आई एफएससी	: UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ	

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

हिन्दू विरासत पर कब्जा

महाराजा कंसा पासी की विरासत को मिटाने में लगे जिहादी

हिन्दुओं के ऐतिहासिक स्थलों पर मुसलमान किस प्रकार कब्जा कर रहे हैं, इसका नवीन उदाहरण राजधानी लखनऊ के निकट मलिहाबाद के कसमण्डी कलां गाँव में महाराजा कंसा पासी का किला है। पहले किले में स्थित शिव मन्दिर में पूजा होती थी, आज वहाँ नमाज पढ़ी जा रही है। आसपास की भूमि पर भी जिहादियों ने कब्जा कर लिया है। इसको लेकर पासी समाज की अगुआई में हिन्दू समाज आगे आया है। आम जनमानस से लेकर साधु सन्त तक इस कब्जे के विरोध में उठ खड़े हुए हैं और हर प्रकार से पासी समाज को सहायता करने को आतुर हैं। क्षेत्र में हिन्दू राजा के किले को संरक्षित करने के लिये लोगों ने बड़े स्तर पर प्रदर्शन शुरू किये हैं। इस बीच सुहेलदेव आर्मी, लाखन पासी आर्मी, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदण्डी महासभा सहित कई संगठनों ने यहाँ सुन्दरकाण्ड और हनुमान चालीसा पाठ की घोषणा की है।

अंग्रेजी गजेटियर में उल्लेख

अंग्रेजी गजेटियर और स्थानीय ऐतिहासिक विवरणों के आधार पर कसमण्डी का नाम राजा कंसा से जुड़ा रहा है। लखनऊ गजेटियर में लिखा है कि 11वीं शताब्दी के अन्तिम दौर में काकोरी और आसपास के इलाकों में राजा कंसा का शासन था। गजेटियर के अनुसार, जब सालार मसूद गाजी दिल्ली से अवध क्षेत्र की ओर आगे बढ़ा, तो राजा कंसा ने उससे मुकाबला किया था। कसमण्डी और काकोरी क्षेत्र में सालार मसूद और स्थानीय राजाओं के बीच मुख्य रूप से संघर्ष हुआ था। अंग्रेजी गजेटियर में यह भी दर्ज है कि कसमण्डी के आसपास सालार मसूद के दो सेनापति सैय्यद हातिम और खातिम को राजा कंसा ने मौत के घाट उतार दिया था। स्थानीय परम्पराओं व क्षेत्रीय इतिहास में राजा कंसा को अवध की धरती पर विदेशी आक्रमण का प्रतिरोध करने वाले योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

शिव मन्दिर पर कब्जा

कसमण्डी के किले और उसके अन्दर बने शिव मन्दिर पर वर्तमान समय में

मुस्लिमों ने कब्जा जमा लिया है। किले में हर शुक्रवार मुसलमान नमाज पढ़ने आते हैं। किले के अन्दर नयी कब्र बना दी गयी हैं। किले के बाहर उर्दू में शिलापट लगा दिया गया है। पासी समाज अवैध कब्जे का विरोध कर रहा है। पासी समाज ने इस मामले में मुख्यमंत्री योगी से कार्रवाई की माँग की है।

वीर योद्धा थे महाराजा कंसा पासी

महाराजा कंसा पासी अवध क्षेत्र के प्रतापी राजा थे। स्थानीय इतिहास के अनुसार, उन्होंने इस क्षेत्र पर वर्ष 980 से वर्ष 1031 तक राज किया था। उनका साम्राज्य लखनऊ के मलिहाबाद, काकोरी से लेकर उन्नाव, सण्डीला और हरदोई तक फैला हुआ था। 1030 में सालार गाजी ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया था। भीषण लड़ायी में सालार की सेना के बहुत सैनिक मारे गये थे, लेकिन विजय गाजी की हुई थी। हालाँकि राजा कंसा के दोनों बेटे मल्हिया और सल्हिया सुरक्षित निकल गये थे। बाद में राजा कंसा के दोनों बेटों ने अपने क्षेत्र पर पुनः कब्जा कर लिया। 1205 में बख्तियार खिलजी ने इस क्षेत्र

पर आक्रमण किया और उसके बाद मुस्लिम शासकों का वहाँ शासन रहा। राजा कंसा के समय जो भी किले बनाये जाते थे, उसमें मन्दिर भी होते थे। ऐसे में विवादित स्थल राजा कंसा पासी का मन्दिर ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिये।

सपा सरकार में 18 बीघा भूमि पर बना दिया कब्रिस्तान

कसमण्डी कलां में दो ढाँचों को लेकर विवाद की जड़ कब्रिस्तान की चारदीवारी है। वर्ष 2012 में सपा सरकार में इस गाँव की 18 बीघा भूमि को कब्रिस्तान में दर्ज किया गया था। इसके बाद कब्रिस्तान के चारों तरफ दीवार बनवायी गयी। उस समय इसको लेकर विवाद हुआ था। इस कब्रिस्तान के पास ही तीन और मजारें हैं, जिनको लेकर पहले भी दोनों पक्षों में तनातनी होती रही है। गाँव के जिन दो ढाँचों को लेकर विवाद है, उस तरह का एक ढाँचा और भी है।

कब्रिस्तान के बगल सड़क के किनारे पेड़ों से घिरे इस ढाँचे की छत कुछ वर्षों पहले ढह चुकी है। गाँव के लोग इस ढाँचे को भी राजा कंसा पासी का ही निर्माण बताते हैं, लेकिन वर्तमान में इसमें भी मजार बना दी गयी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि किले का यह स्थान लम्बे समय से ऊसर पड़ा था। जिसे बाद में राजस्व रिकार्ड में कब्रिस्तान के रूप में दर्ज कर दिया गया। इसका मुकदमा वर्तमान में सिविल जज के यहाँ विचाराधीन है।

यहीं दफनाये गये थे युद्ध में मारे गये सालार मसूद गाजी के सैनिक

कब्रिस्तान के बगल बनीं मजारों के बारे में गाँव वालों का कहना है कि 11वीं सदी (लगभग 1030-1033 ईस्वी) में अवध क्षेत्र में आक्रमण करने वाले सैयद सालार मसूद गाजी और राजा कंसा पासी के बीच भीषण युद्ध हुआ था। इतिहास के शिक्षक देवेन्द्र मिश्र ने बताया कि सालार मसूद गाजी ने अपने सेनापति सैयद हातिम और सैयद खातिम को एक बड़ी सेना के साथ मलिहाबाद (कसमण्डी) के राजा कंसा पासी से लड़ने के लिये भेजा था। राजा कंसा पासी ने तुर्क सेना का डटकर सामना किया और अत्यन्त वीरता का परिचय दिया। इस भीषण संघर्ष में गाजी के सेनापति हातिम और खातिम मारे गये थे। इनकी मजारें आज भी कसमण्डी कलां में मौजूद हैं। यह स्थान थोड़ा ढलान पर है, जबकि गाँव ऊँचायी पर बसा है। इसकी संरचना ऐसी बनायी गयी थी कि गाँव में कोई भी प्रवेश करे तो ऊँचायी पर बने घरों से सीधे उसे देखा जा सके। गाँवों की बसावट टीले पर इसलिये भी की गयी थी, ताकि उन्हें सम्भावित खतरों के बारे में पहले से पता चल सके।

नाग, कलश और पुष्प से मुस्लिमों का सम्बन्ध नहीं

इतिहासकारों का मानना है कि इस ढाँचे पर उकेरी गयीं नाग, कलश और पुष्प की आकृतियाँ हिन्दू धर्म से जुड़ी हैं। इनसे मुस्लिम समुदाय का न तो सम्बन्ध है और न ही कोई लेना-देना, क्योंकि ये प्रतीक चिह्न हिन्दू, बौद्ध की या जैन धर्म में ही पाये जाते हैं। इतिहासकार रवि भट्ट कहते हैं कि मोहम्मद गोरी जब भारत आया था, तब बड़ी संख्या में हिन्दू धार्मिक स्थलों को तोड़कर मकबरे बनाये गये थे, जिनमें मुस्लिमों ने इबादत करनी शुरू कर दी थी। अगर किसी स्थल पर नाग, कलश और पुष्प-पत्तियों की आकृतियाँ हैं तो वे हिन्दू धर्म का प्रतीक हैं। ऐसी ही आकृतियाँ भोजशाला में भी मिली हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव कहना है कि ऐसे प्रतीक चिह्न मुस्लिम समुदाय में नहीं मिलते। ये हिन्दू, बौद्ध या जैन धर्म में ही मिलते हैं।

साधु-सन्त हिन्दू समाज के साथ

इस मामले में अब अयोध्या के साधु-सन्त पासी समाज के साथ आ गये हैं। अयोध्या की हनुमानगढ़ी के महन्त रामदास ने कहा कि हमें अपनी विरासत, संस्कृति और राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा के लिये सतर्क रहना चाहिये। महन्त राजूदास ने कहा कि हम अपना हक लड़ने वाले समुदाय को तन, मन, धन से समर्थन देने को प्रतिबद्ध हैं। तपस्वी छावनी के पीठाधीश्वर जगदुरु परमहंस आचार्य ने कहा कि मुस्लिमों को यह सच स्वीकार करना होगा कि उनकी सांस्कृतिक धार्मिक परम्परा भारतीय मूल पर आधारित है।

मौलाना फरार

विवादित स्थल पर नमाज शुरू करने वाला बहराइच निवासी मौलाना फरार हो गया है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि सुलेमानिया

एजुकेशनल स्कूल (मदरसा) के मौलाना जमील अहमद ने करीब डेढ़ साल पहले ढाँचे में नमाज शुरू करायी थी, जिससे विवाद बढ़ा। मौलाना इन दिनों फरार है और मदरसा बन्द है। ग्रामीणों के मुताबिक, तीन वर्ष पहले आये इस बाहरी व्यक्ति ने पुराने ढाँचों की सफायी कर नमाज शुरू की और पास में ही बिना मान्यता का सुलेमानिया स्कूल खोला, जहाँ नवीपनाह गाँव के मुस्लिम नट बिरादरी के 20 बच्चे पढ़ते थे।

उधर लाखन आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सूरज पासी का कहना है कि विवादित स्थान पर नमाज पढ़े जाने से पासी समाज में नाराजगी है। मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर जाँच और महाराजा कंसा पासी के किले के संरक्षण की माँग की गयी है। जाँच पूरी होने तक यहाँ नमाज की अनुमति देना गलत है। तीन-चार साल में पक्की कब्रें बनाकर अतिक्रमण किया गया है। ●

भारतीय वाङ्मय में पर्यावरण

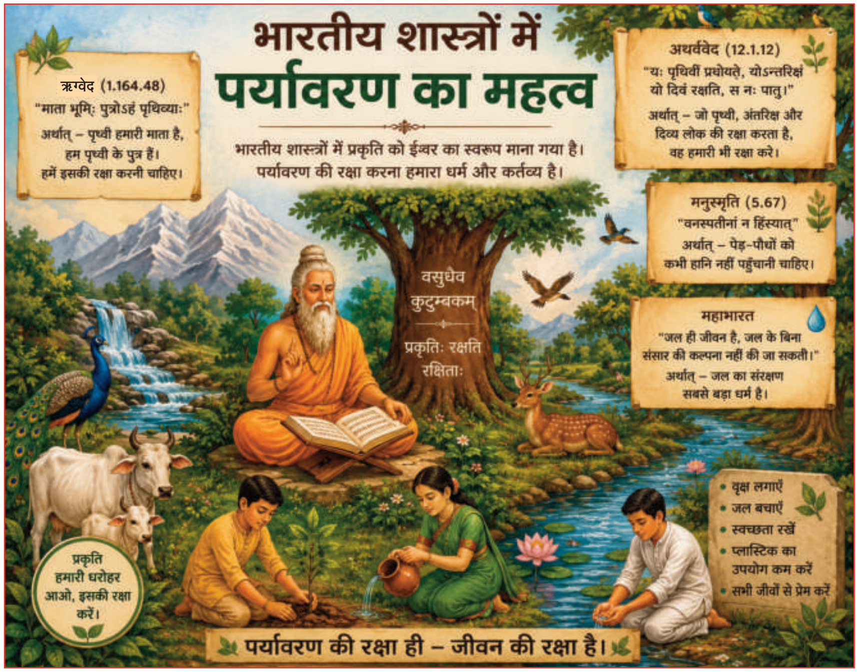

सनातन संस्कृति और भारतीय शास्त्रों में पर्यावरण कोई बाह्य या जड़ वस्तु नहीं है जिसे मानव मात्र उपभोग के लिये उपयोग में लाये। यहाँ सृष्टि को समष्टि रूप में देखा गया है जहाँ जड़ और चेतन, दृश्य और अदृश्य, सब एक ही परमचेतना के विभिन्न स्वरूप हैं। आधुनिक युग जिस 'पारिस्थितिक सन्तुलन' की खोज में भटक रहा है उसका बीज भारतीय मनीषियों ने सहस्राब्दियों पूर्व अपने वेदों, उपनिषदों, पुराणों और काव्यों में बो दिया था। हमारे शास्त्रों में पर्यावरण का अर्थ केवल वृक्षारोपण या प्रदूषण मुक्ति नहीं है, अपितु यह आत्मा का ब्रह्माण्ड से एकात्मभाव है।

अद्वैत भाव और सर्वव्यापकता

वेदान्त दर्शन का चरम सिद्धान्त 'अद्वैत' है जो जीव और जगत में कोई भेद नहीं देखता। उपनिषदों की उद्घोषणा है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस ब्रह्म का ही विस्तार है। ईशोपनिषद के प्रथम श्लोक में ही इस शाश्वत सत्य को रेखांकित किया गया है:

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

ईशावास्योपनिषद् - १

इस सम्पूर्ण चराचर जगत में जो कुछ भी गतिशील या स्थिर है वह सब ईश्वर द्वारा व्याप्त है। अतः इस प्रकृति का उपयोग त्यागपूर्वक उपभोग (Sustainable Consumption) के रूप में करना चाहिये न कि लोभवश इसका दोहन करना चाहिये। वेदान्त सिखाता है कि जब प्रत्येक तत्व में एक ही चेतना विद्यमान है तो प्रकृति को क्षति पहुँचाना स्वयं अपने अस्तित्व को आघात पहुँचाने के समतुल्य है।

प्रकृति का दैवीकरण

भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के प्रत्येक अवयव में देवत्व का दर्शन किया। यह अन्धविश्वास नहीं अपितु प्रकृति के प्रति अगाध कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने की परम वैज्ञानिक पद्धति थी।

पर्वतराज : पर्वतों को केवल पत्थरों का संचय नहीं, बल्कि 'देवतात्मा' माना गया है। कुमारसंभवम् में महाकवि कालिदास लिखते हैं-

'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः'

पर्वत बादलों को रोककर वर्षा करते हैं और नदियों के उद्गम स्थल हैं इसलिये वे पूजनीय हैं।

नदियाँ : भारत में नदियाँ जलमार्ग नहीं, अपितु 'माता' हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती को साक्षात चेतना मानकर उनकी आराधना की जाती है क्योंकि वे जीवनदायिनी हैं।

वैदिक वांग्मय में पंचमहाभूत

वैदिक ऋषियों ने भली-भाँति समझ लिया था कि मानव शरीर और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से निर्मित हैं। इनमें से किसी भी तत्व का असन्तुलन प्रलय का कारण बन सकता है।

यजुर्वेद का सुप्रसिद्ध 'शान्ति पाठ' ब्रह्माण्ड के प्रत्येक घटक में सामंजस्य की प्रार्थना करता है:

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

(यजुर्वेद - ३६.१७)

अर्थात द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ और सम्पूर्ण विश्व में शान्ति और सन्तुलन स्थापित रहे।

अथर्ववेद का 'भूमि सूक्त' तो पर्यावरण चेतना का वैश्विक घोषणापत्र है। जहाँ ऋषि उद्घोष करते हैं:

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः

(अथर्ववेद - १२.१.१२)

भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ। माता और पुत्र का यह सम्बन्ध अधिकार पर नहीं बल्कि कर्तव्य और आदर पर टिका है। भूमि सूक्त में पृथ्वी के पर्वतों, वनों, जलस्रोतों की रक्षा की सौगन्ध खायी गयी है।

रामायण में प्राकृतिक सौन्दर्य

वाल्मीकि रामायण और गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में प्रकृति को चेतना युक्त और मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत दिखाया गया है। श्रीराम का वनगमन वास्तव में प्रकृति के साथ उनके तादात्म्य का उत्सव है।

किष्किन्धाकाण्ड में वर्षा और शरद ऋतु के वर्णन के माध्यम से तुलसीदास जी ने पर्यावरण और नीति को एक सूत्र में पिरोया है। जब श्रीराम वन में विरही अवस्था में हैं, तब वे लक्ष्मण जी से प्रकृति के परिवर्तनों को साझा करते हैं:

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ।
जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे।

खल के बचन संत सह जैसें।।

(रामचरितमानस - किष्किंधाकाण्ड)

छिति, जल, पावक, गगन और समीर से निर्मित यह शरीर हमें याद दिलाता है कि मनुष्य प्रकृति का ही अंश है और उसका अस्तित्व इन पंचमहाभूतों पर निर्भर है। यहाँ मेघों का पृथ्वी के निकट आना विद्या पाकर विद्वान के झुक जाने के समान है। पर्वत द्वारा बूँदों के आघात को सहना, सन्तों द्वारा दुष्टों के वचनों को सहने जैसा है। यह उपमाएँ दर्शाती हैं कि प्रकृति का कण-कण हमें सदाचार और धैर्य की शिक्षा देता है।

मानस में चित्रकूट और पंचवटी का वर्णन इस बात का साक्ष्य है कि सघन वन और पशु-पक्षी मानव के परम मित्र हैं। श्रीराम के सान्निध्य में हिंसक पशु भी अपनी हिंसा भूलकर परस्पर प्रेम से रहते हैं जो कि आदर्श पारिस्थितिकी का परिचायक है।

वृक्ष और वन्यजीव संरक्षण

अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण और पद्म पुराण में वृक्षारोपण को महायज्ञ के समान पुण्यकारी माना गया है। मत्स्य पुराण का यह श्लोक वृक्ष की महत्ता को अद्भुत रूप से प्रतिपादित करता है:

दशकूपसमा वापी दशनहदसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।

(मत्स्य पुराण - १५४.५१२)

अर्थात दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब होता है दस तालाबों के बराबर एक पुत्र होता है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है! वृक्ष को दस पुत्रों से श्रेष्ठ मानकर सनातन शास्त्र पर्यावरण संरक्षण की पराकाष्ठा को छूते हैं।

तुलसी, पीपल, वटवृक्ष, और आँवला जैसे वृक्षों की पूजा के पीछे वैज्ञानिक कारण हैं, क्योंकि ये निरन्तर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और वायुमण्डल को शुद्ध रखते हैं। वन्यजीवों को विभिन्न देवी-देवताओं का वाहन (जैसे सिंह, मूषक, मयूर, गरुड़) बनाकर उनके शिकार पर पूर्णतः आध्यात्मिक निषेध लगाया गया।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जहाँ जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत का क्षरण, और प्रदूषण सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व के लिये संकट बन चुके हैं वहाँ भारतीय शास्त्रों का यह दृष्टिकोण एक संजीवनी की भान्ति है। पाश्चात्य जगत ने प्रकृति को एक 'वस्तु' माना जिसका केवल उपभोग करना है जबकि भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को 'माता' माना जिसका संरक्षण और पोषण हमारा परम धर्म है। भारतीय वांग्मय की यह क्लिष्ट और गूढ़ चेतना केवल अतीत का गौरव गान नहीं है अपितु भविष्य के संकट का एकमात्र समाधान है। जब तक हम **'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'** के भाव को आत्मसात नहीं करेंगे, तब तक वैश्विक पर्यावरण की रक्षा असम्भव है। पर्यावरण का संरक्षण केवल वैधानिक नियमों से नहीं बल्कि आंतरिक आध्यात्मिक चेतना के जागरण से ही सम्भव है, जिसका मार्ग हमारे शास्त्रों में अनन्त काल से आलोकित है। ●

लेखक : हिन्दू अध्ययन केन्द्र डी.यू. के छात्र व पर्यावरण संरक्षण बल अध्यक्ष हैं।

पराली से एक सप्ताह में बनेगी जैविक खाद

लखनऊ। पराली प्रबन्धन की समस्या से जूझ रहे किसानों के लिए राहत भरी खबर है। केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के लखनऊ स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के विज्ञानियों ने एक ऐसा जैविक घोल तैयार किया है, जिसकी मदद से धान, गेहूँ और गन्ने की पराली को बेहद कम समय में जैविक खाद में बदला जा सकेगा। इस नयी तकनीक से न केवल किसानों को पराली जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि फसल उत्पादन में भी बढ़ोतरी होने की सम्भावना है।

तीन वर्षों के शोध के बाद विज्ञानियों ने "हेलो केयर" नामक जैविक तरल उत्पाद विकसित किया है। यह खास प्रकार के फंगल समूहों पर आधारित है, जो फसल अवशेषों को तेजी से विघटित करने में सक्षम हैं। विज्ञानियों ने इसका परीक्षण प्रयोगशाला और खेत दोनों स्तरों पर किया, जिसमें इसके सकारात्मक परिणाम सामने आये।

प्रधान विज्ञानी डॉ. संजय अरोड़ा ने बताया कि पहले पराली को खाद में बदलने में दो से तीन महीने तक का समय लगता था, लेकिन हेलो केयर के प्रयोग से यह प्रक्रिया अब एक से तीन सप्ताह में पूरी हो सकती है। उन्होंने बताया कि

इस तकनीक से अवशेषों के विघटन की दर 70 प्रतिशत से अधिक तक पहुँच गयी है, जो पारम्परिक तरीकों की तुलना में करीब 20 प्रतिशत ज्यादा प्रभावी है। विज्ञानियों के अनुसार यह उत्पाद धान, गेहूँ और गन्ना तीनों फसलों के अवशेषों पर समान रूप से प्रभावी है। इससे किसानों को अलग-अलग फसलों के लिये अलग उत्पाद खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। एक लीटर हेलो केयर को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत में छिड़काव किया जा सकता है। इसकी लागत लगभग 150 से 200 रुपये प्रति एकड़ बतायी गयी है, जो किसानों के लिये काफी किफायती मानी जा रही है।

पराली जलाने पर लगेगी रोक

इस तकनीक का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे पराली जलाने की समस्या पर काफी हद तक रोक लगायी जा सकेगी। हर साल पराली जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और मिट्टी की उर्वरता भी प्रभावित होती है। पराली जलाने से मिट्टी में मौजूद उपयोगी सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं, जिससे जमीन की गुणवत्ता धीरे-धीरे कमजोर होने लगती है। हेलो केयर के उपयोग से पराली खेत में ही सड़कर जैविक खाद में बदल जायेगी, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता सुधरेगी और कार्बन पुनर्चक्रण को भी बढ़ावा मिलेगा।

फसल उत्पादन में 15% तक वृद्धि

विज्ञानियों का दावा है कि इस जैविक घोल के इस्तेमाल से फसल उत्पादन में 12 से 15 प्रतिशत तक की वृद्धि सम्भव है। इससे किसानों को कम लागत में बेहतर उत्पादन मिलेगा और रासायनिक खादों पर निर्भरता भी घटेगी।

संस्थान की योजना है कि पेटेन्ट प्रक्रिया पूरी होने से पहले इस तकनीक को जिला कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों तक पहुँचाया जाये, ताकि अधिक से अधिक किसान इसका लाभ उठा सकें। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह तकनीक बड़े स्तर पर अपनायी गयी तो पराली प्रबन्धन की समस्या का स्थायी समाधान निकल सकता है और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलेगी। ●

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज

महापुरुषों का जीवन केवल व्यक्तिगत यात्रा नहीं होता, बल्कि वह समाज और संस्कृति के लिये एक जीवन्त विश्वविद्यालय बन जाता है। ऐसे महापुरुष युगों की चेतना को आलोकित करते हैं तथा अपने ज्ञान, साधना और तप से मानवता को नयी दिशा प्रदान करते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में अनेक मनीषियों ने अपने चिन्तन और आध्यात्मिक साधना से अमिट छाप छोड़ी है, जिनमें महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी का नाम अत्यन्त श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 7 सितम्बर 1887 ई. में अखण्ड भारत (वर्तमान बांग्लादेश) के ढाका जनपद में हुआ था। उनके प्रपितामह कमलकान्त, पितामह चन्द्रनाथ तथा पिता वैकुण्ठनाथ विद्वत परम्परा से जुड़े प्रतिष्ठित विद्वान थे। उनकी माता का नाम सुखदा सुन्दरी था। बाल्यावस्था से ही उनमें गम्भीर चिन्तन, अध्ययनशीलता तथा आत्मिक उन्नति की विशेष प्रवृत्ति दिखायी देने लगी थी, जिसने आगे चलकर उन्हें भारतीय ज्ञान परम्परा के महान मनीषियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित किया।

प्रारम्भिक जीवन एवं शिक्षा

बचपन में गोपीनाथ कविराज की प्रारम्भिक शिक्षा कण्ठालिया के प्राथमिक विद्यालय में हुई। बाल्यावस्था से ही वे अत्यन्त मेधावी, गम्भीर एवं अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे। अल्प आयु में ही उनमें ज्ञान के प्रति गहरी जिज्ञासा तथा आध्यात्मिक संस्कारों के स्पष्ट संकेत दिखायी देने लगे थे। मात्र नौ वर्ष की आयु में उनका उपनयन संस्कार सम्पन्न हुआ, जिसने उनके जीवन को वैदिक एवं आध्यात्मिक चेतना से और अधिक अनुप्राणित कर दिया। उस समय की सामाजिक परम्पराओं के अनुसार तेरह वर्ष की अल्प आयु में उनका विवाह कुसुम कामिनी देवी के साथ कर दिया गया।

जीवन के प्रारम्भिक दिनों में ही उन्हें अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। विपरीत परिस्थितियाँ भी उनके ज्ञानार्जन के संकल्प को विचलित न कर सकीं। ढाका के जुबली स्कूल से संस्कृत एवं अंग्रेजी की शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु जुलाई 1906 में वे जयपुर पहुँचे और महाराजा कॉलेज में प्रवेश लिया। ज्ञान-पिपासा से प्रेरित होकर आगे की शिक्षा के लिये वे जयपुर से काशी चले गये, जो उस समय भारतीय विद्या, दर्शन और अध्यात्म की प्रमुख साधना-भूमि थी। काशी के क्वींस कॉलेज में अध्ययन करते हुए उनका व्यक्तित्व और अधिक परिपक्व हुआ। तत्पश्चात निरन्तर परिश्रम, असाधारण प्रतिभा और गहन अध्ययनशीलता के बल पर उन्होंने वर्ष 1913 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर अपनी विलक्षण मेधा का परिचय दिया।

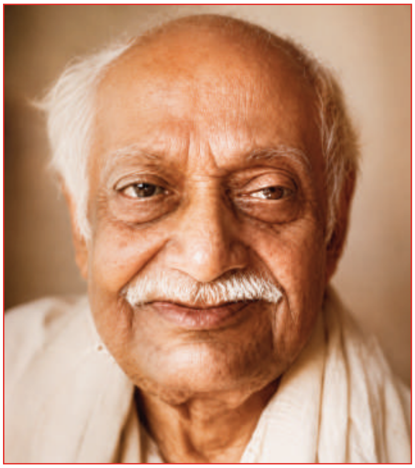

विलक्षण प्रतिभा के धनी

कविराज विलक्षण विद्वत्ता, अनुशासन और गहन अध्यापन-क्षमता के कारण वर्ष 1923 में उन्हें तत्कालीन संस्कृत कॉलेज (वर्तमान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) का प्राचार्य नियुक्त किया गया। यह उनके शैक्षिक जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। लगभग चौदह वर्षों तक उन्होंने इस संस्था का कुशल नेतृत्व करते हुए संस्कृत, भारतीय दर्शन और तंत्र अध्ययन की परम्परा को नयी प्रतिष्ठा प्रदान की। उनके कार्यकाल में यह संस्थान भारतीय ज्ञान परम्परा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में और अधिक गौरवशाली बना। अन्ततः वर्ष 1937 में उन्होंने स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति ग्रहण कर लिया, किन्तु ज्ञान-साधना, अध्ययन और आध्यात्मिक चिन्तन की उनकी यात्रा जीवनपर्यंत अविराम चलती रही।

काशी की साधना भूमि

काशी की आध्यात्मिक एवं विद्वत परम्परा ने गोपीनाथ कविराज जी के व्यक्तित्व को एक नयी दिशा और गहरायी प्रदान की। यह नगरी केवल शिक्षा का केन्द्र नहीं थी, बल्कि भारतीय दर्शन, साधना और सांस्कृतिक चेतना की जीवन्त भूमि थी। वर्ष 1914 में उनकी नियुक्ति तत्कालीन राजकीय संस्कृत कॉलेज के अन्तर्गत स्थित प्रसिद्ध सरस्वती भवन पुस्तकालय में 125 रुपये प्रतिमाह वेतन पर लाइब्रेरियन के रूप में हुई। इसी के साथ काशी से उनके सार्वजनिक एवं शैक्षिक जीवन की औपचारिक शुरुआत हुई। लगभग छह वर्षों (1914-1920) तक उन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए स्वयं को निरन्तर अध्ययन और शोध में समर्पित रखा।

स्वामी विशुद्धानन्द से भेंट

काशी प्रवास के दौरान उनका सम्पर्क अनेक सिद्ध सन्तों और योगियों से हुआ, जिनमें प्रसिद्ध योगी स्वामी विशुद्धानन्द तथा आनन्दमयी माँ प्रमुख थे। लगभग 1917-18 में उनकी भेंट स्वामी विशुद्धानन्द से हुई और उन्होंने उनसे दीक्षा ग्रहण की।

स्वामी विशुद्धानन्द जी अपने अद्भुत योगबल, सूर्य-विज्ञान तथा उच्चकोटि की साधना के लिये प्रसिद्ध थे। प्रारम्भ में कविराज जी उनके व्यक्तित्व और साधना-पद्धति के प्रति जिज्ञासु थे, किन्तु शीघ्र ही यह जिज्ञासा गहन श्रद्धा में परिवर्तित हो गयी। उन्होंने अनुभव किया कि स्वामी विशुद्धानन्द केवल सिद्धियों के प्रदर्शनकर्ता योगी नहीं, बल्कि आत्मानुभूति और ब्रह्मविद्या के महान साधक थे। स्वामी विशुद्धानन्द के सान्निध्य ने उनके आध्यात्मिक चिन्तन को नयी गहरायी प्रदान की। वे पहले से ही शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान थे, परन्तु इस संगति में उन्हें अनुभवजन्य अध्यात का वास्तविक बोध हुआ। उन्होंने समझा कि केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं और आत्मानुभूति ही वास्तविक ज्ञान का आधार है। उन्होंने प्रसिद्ध कृति विशुद्धानन्द प्रसंग में स्वामी जी के व्यक्तित्व, योग-साधना और आध्यात्मिक अनुभूतियों का अत्यन्त मार्मिक एवं दार्शनिक वर्णन किया है।

आनन्दमयी माँ के साथ आत्मीयता

कविराज जी और आनन्दमयी माँ का सम्बन्ध भारतीय अध्यात्म की उन दुर्लभ आध्यात्मिक धरोहरों में गिना जाता है, जहाँ ज्ञान, साधना और आत्मानुभूति का अद्वितीय संगम दिखायी देता है। काशी की पावन भूमि पर लगभग 1928-29 के आसपास हुई उनकी प्रथम भेंट ने उनके आध्यात्मिक जीवन को नयी गहरायी प्रदान की।

आनन्दमयी माँ के अलौकिक व्यक्तित्व, सहज समाधि, निर्मल करुणा और दिव्य चेतना ने उन्हें अत्यन्त प्रभावित किया। उन्होंने माँ को किसी सम्प्रदाय विशेष की साधिका न मानकर जीवन्त अध्यात्म और दिव्य चेतना की साक्षात मूर्ति के रूप में देखा।

भारतीय ज्ञान परम्परा की आधुनिक व्याख्या

ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य आत्मानुभूति है। यही विचार कविराज जी के समग्र चिन्तन और साधना का मूलाधार था। वे केवल तंत्रशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान ही नहीं, बल्कि वेद-वेदांग, न्याय, सांख्य, योग, बौद्ध एवं जैन दर्शन सहित भारतीय ज्ञान परम्परा की विविध धाराओं के प्रकाण्ड अध्येता थे। उनकी विद्वत्ता भारतीय शास्त्रों तक सीमित नहीं थी; सूफीवाद और ईसाई रहस्यवाद जैसे आध्यात्मिक परम्पराओं का भी उन्हें गहन एवं सूक्ष्म ज्ञान था। उन्होंने भारतीय अध्यात्म को आधुनिक बौद्धिक चेतना के साथ जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास किया और यह प्रतिपादित किया कि अध्यात्म केवल रहस्यवादी अनुभूति नहीं, बल्कि मानव चेतना के उत्कर्ष का मार्ग है। उन्होंने तंत्र, योग और अध्यात्म को मात्र शास्त्रीय विमर्श तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवनानुभूति, आत्मबोध और लोकमंगल से जोड़कर देखा।

उनका समग्र व्यक्तित्व भारतीय सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक गहरायी और बौद्धिक ऊँचायी का अद्वितीय समन्वय था। भारतीय विद्वत परम्परा में उनका स्थान एक ऐसे प्रकाशस्तम्भ के समान है, जिसने ज्ञान, साधना और अध्यात्म की दिशा को नयी ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। तप, विनम्रता, साधना और गहन अध्ययन से आलोकित उनका जीवन भारतीय ऋषि-परम्परा की उज्ज्वल गरिमा का जीवन्त प्रतीक बन गया।

आध्यात्मिक चिन्तन

गोपीनाथ कविराज जी का आध्यात्मिक जीवन प्रत्यक्ष अनुभूति, साधना और आत्मबोध की गहन भूमि पर आधारित था। बाल्यकाल से ही वे गम्भीर, अन्तर्मुखी और चिन्तनशील प्रकृति के थे। सांसारिक आकर्षणों और बाह्य आडम्बरों से दूर रहकर उन्होंने आत्मिक उन्नति को ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बना लिया था। उनके व्यक्तित्व में वैराग्य, मौन, ध्यान और आत्मनिष्ठा का अद्भुत समन्वय दिखायी देता है, जो उन्हें सामान्य विद्वानों से भिन्न एक साधक-मनीषी के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

उन्होंने वेदान्त, योग, शैव दर्शन तथा तांत्रिक साधना जैसी भारतीय अध्यात्म की विविध धाराओं का गहन अध्ययन किया और उन्हें अपने जीवन में आत्मसात किया। उनके लिये अध्यात्म कोई रहस्यवादी कल्पना नहीं, बल्कि जीवन का प्रत्यक्ष और अनुभवजन्य सत्य था। वे गुरु-तत्त्व को साधना का अनिवार्य आधार मानते थे और कहते थे कि गुरु केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि चेतना के जागरणकर्ता होते हैं।

तांत्रिक साधना के साधक

तंत्र साधना के क्षेत्र में गोपीनाथ कविराज जी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। वे केवल तंत्रशास्त्र के विद्वान नहीं थे, बल्कि तांत्रिक साधना के वास्तविक साधक भी थे। वे तंत्र को शक्ति-साधना का मार्ग मानते थे, जिसका उद्देश्य मनुष्य के भीतर सुप्त शक्तियों का जागरण है। वे मानते थे कि तंत्र का वास्तविक स्वरूप अत्यन्त पवित्र एवं आध्यात्मिक है, किन्तु अज्ञानवश समाज में उसके प्रति अनेक भ्रान्तियाँ फैल गयी हैं। उन्होंने कुण्डलिनी जागरण, शक्ति-तत्त्व, मंत्र-साधना, योग तथा शैव-शाक्त दर्शन पर गम्भीर अध्ययन किया। वे तांत्रिक साधना को आत्मपरिवर्तन की प्रक्रिया मानते थे। इनका तांत्रिक चिन्तन अत्यन्त उच्च कोटि का था। वे तंत्र को वेदान्त और योग का पूरक मानते थे। उनके अनुसार तंत्र मनुष्य को शिवत्व की ओर ले जाने वाली साधना है।

वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति का प्रसार

गोपीनाथ कविराज ने भारतीय तंत्र परम्परा को नवीन बौद्धिक प्रतिष्ठा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में

वर्ष	सम्मान/ उपाधि	संस्था
1934	महामहोपाध्याय	भारत सरकार
1937	कोरोनेशन मेडल	भारत सरकार
1947	डी लिट्	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
1956	डी लिट्	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
1959	सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर	राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद
1964	पद्म विभूषण	भारत सरकार
1965	साहित्य वाचस्पति	भारत सरकार
1965	डी लिट्	कोलकाता विश्वविद्यालय
1976	देशिकोत्तम	विश्वभारती

तंत्रागम विभाग की स्थापना कर तंत्रशास्त्र को व्यवस्थित अकादमिक अध्ययन का विषय बनाया तथा उसे राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी नयी पहचान दिलायी। उस समय तंत्र को प्रायः अन्धविश्वास और रहस्यवाद से जोड़कर देखा जाता था किन्तु कविराज जी ने अपने गहन अध्ययन, साधना और दार्शनिक व्याख्याओं के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि तंत्र मानव चेतना के उत्कर्ष का एक गूढ़ आध्यात्मिक विज्ञान है। उनके लिए अध्यात्म केवल बौद्धिक चिन्तन का विषय नहीं, बल्कि आत्मानुभूति और चेतना-जागरण की जीवन्त प्रक्रिया था।

कविराज के प्रमुख ग्रंथ

गोपीनाथ कविराज ने तंत्र, योग, भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के विविध आयामों पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना कर भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध किया। उनके लेखन में गहन दार्शनिक चिन्तन, साधना की अनुभूति और भारतीय आध्यात्मिक चेतना का अद्भुत समन्वय दिखायी देता है।

भारतीय संस्कृति और साधना, तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त, काशी की सारस्वत साधना, अखण्ड महायोग का पथ और मृत्युविज्ञान, श्री श्री विशुद्धानन्द प्रसंग, तान्त्रिक साहित्य, श्रीकृष्ण प्रसंग, मृत्युविज्ञान और कर्मरहस्य, गोरख सिद्धान्त संग्रह, साहित्यचिन्तन, योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा, शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी, अखण्ड महायोग तथा तन्त्र और आगमशास्त्रों का दिग्दर्शन जैसे उनके ग्रंथ भारतीय अध्यात्म, तंत्र और योग-साधना के अमूल्य दस्तावेज माने जाते हैं। इन कृतियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय तांत्रिक और आध्यात्मिक परम्परा की गूढ़ता, वैज्ञानिकता और दार्शनिक गहराई को आधुनिक युग के समक्ष प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। ●

स्क्रीन टाइम, सुविधा से निर्भरता तक और वापसी की आवश्यकता

यह समय तकनीक का समय है। दुनिया हमारी हथेली में सिमट चुकी है। मोबाइल फोन अब केवल संवाद का माध्यम नहीं रहा; वह मनोरंजन, शिक्षा, जानकारी, सामाजिक सम्बन्धों और कभी कभी भावनात्मक सहारे का भी हिस्सा बन गया है। सुबह आँख खुलते ही सबसे पहले फोन देखना और रात को सोने से पहले आखिरी बार स्क्रीन पर नज़र डालना आज की सामान्य दिनचर्या बन चुकी है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तकनीक ने जीवन को अधिक सरल, तेज़ और सुविधाजनक बनाया है, लेकिन हर सुविधा की एक सीमा होती है। जब कोई साधन धीरे-धीरे हमारी आदत, फिर आवश्यकता और अन्ततः निर्भरता बन जाये, तब उसके प्रभावों पर गम्भीरता से विचार करना आवश्यक हो जाता है। आज स्क्रीन टाइम का प्रश्न ठीक इसी चिन्ता के केन्द्र में खड़ा दिखायी देता है।

कुछ वर्ष पहले तक मोबाइल जीवन का एक हिस्सा था, आज कई लोगों के लिये वह जीवन का केन्द्र बनता जा रहा है। कुछ मिनट के लिये खोला गया सोशल मीडिया कब घण्टों का समय निगल जाता है, इसका एहसास भी नहीं होता। अन्तहीन रील्स, लगातार आने वाले नोटिफिकेशन, शॉर्ट वीडियो, ऑनलाइन गेम्स और बिना उद्देश्य के स्क्रॉल करते रहने की आदत ने युवाओं के समय और ध्यान को एक नये प्रकार की व्यस्तता में बाँध दिया है। व्यक्ति को यह महसूस भी नहीं होता कि वह कब वास्तविक जीवन से अधिक आभासी दुनिया में उपस्थित रहने लगा है।

युवाओं पर स्क्रीन टाइम का प्रभाव

विशेष रूप से युवाओं में यह स्थिति अधिक स्पष्ट दिखायी देती है। युवावस्था ऊर्जा, रचनात्मकता, संवाद और नये अनुभवों का समय होती है, लेकिन आज यही ऊर्जा धीरे-धीरे स्क्रीन की सीमाओं में सिमटती प्रतीत होती है। मित्रता चैट बॉक्स तक सीमित होने लगी है, चर्चाओं की जगह छोटे प्रतिक्रियात्मक सन्देशों ने ले ली है, और मनोरंजन कई बार एक ऐसी आदत में बदलता दिखता है जो व्यक्ति को लगातार स्क्रीन से बाँधे रखती है। पहले जहाँ खाली समय खेल के मैदानों, पुस्तकालयों, मित्रों के साथ लम्बी बातचीत या सामाजिक गतिविधियों में बीतता था, वहीं अब उसका बड़ा हिस्सा मोबाइल स्क्रीन के सामने गुजरने लगा है।

सम्पूर्ण शरीर हो रहा प्रभावित

इसका प्रभाव केवल समय की बर्बादी तक सीमित नहीं है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम का असर शरीर, मन और व्यवहार तीनों पर पड़ता है। लम्बे समय तक स्क्रीन देखने से आँखों पर दबाव बढ़ता है, नींद प्रभावित होती है, शारीरिक निष्क्रियता बढ़ती है और कई बार सिरदर्द या थकान जैसी समस्याएँ सामान्य हो जाती हैं। मानसिक स्तर पर इसका प्रभाव और भी गहरा है। एकाग्रता कमजोर होना, धैर्य में कमी, बेचैनी, मानसिक थकान और वास्तविक सामाजिक सम्बन्धों से दूरी जैसी समस्याएँ युवाओं में अधिक देखने को मिल रही हैं। विडम्बना यह है कि हम पहले से अधिक ऑनलाइन जुड़े हुए हैं, लेकिन वास्तविक संवाद और सम्बन्धों में पहले जैसी गर्माहट कम होती दिखायी देती है।

वास्तविक जीवन से बढ़ती दूरी

यदि थोड़ा पीछे मुड़कर देखें तो पाएँगे कि कुछ समय पहले तक युवाओं की दुनिया अधिक सक्रिय हुआ करती थी। खेल के मैदान केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का स्थान होते थे। विश्वविद्यालयों के परिसर बहसों, विचारों और संवादों से जीवन्त रहते थे। पुस्तकालयों में

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की एक सार्थक पहल

स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम

इन्हीं बढ़ती चिन्ताओं के बीच समाज के विभिन्न स्तरों पर युवाओं को अधिक सक्रिय और सन्तुलित जीवनशैली की ओर प्रेरित करने के प्रयास भी किये जा रहे हैं। इसी क्रम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा पूरे देश में "स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम" अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान किसी प्रकार के तकनीकी विरोध की बात नहीं करता, बल्कि युवाओं को सन्तुलित जीवन की ओर लौटने का सन्देश देता है। इसका मूल विचार सरल है कि यदि स्क्रीन टाइम बढ़ रहा है, तो उसके समानान्तर जीवन में वास्तविक गतिविधियों के लिये भी समय निकाला जाये।

इसी सोच के साथ अभियान में "स्क्रीन टाइम टू गेम टाइम", "स्क्रीन टाइम टू नेचर टाइम", "स्क्रीन टाइम टू बुक टाइम" और "स्क्रीन टाइम टू फैमिली टाइम" जैसे सन्देश दिये जा रहे हैं। उद्देश्य युवाओं को यह याद दिलाना है कि खेल केवल शरीर को स्वस्थ नहीं रखते, बल्कि नेतृत्व, अनुशासन और संघर्ष की भावना भी विकसित करते हैं। प्रकृति के बीच बिताया गया समय मानसिक शान्ति देता है। पुस्तकें केवल जानकारी नहीं, दृष्टि देती हैं। परिवार और मित्रों के साथ बिताया गया समय व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है। परिषद की विभिन्न इकाइयों द्वारा इस विषय पर जागरूकता कार्यक्रम, संवाद और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को स्क्रीन के बाहर की दुनिया से फिर जुड़ने के लिये प्रेरित किया जा रहा है।

समय बिताना, प्रकृति के बीच टहलना और परिवार व मित्रों के साथ बिना किसी व्यवधान के बातचीत करना जीवन का स्वाभाविक हिस्सा था। आज भी यह सब सम्भव है, लेकिन स्क्रीन ने धीरे-धीरे इनके हिस्से का समय कम कर दिया है।

यहीं यह समझना आवश्यक है कि समस्या तकनीक नहीं है। तकनीक आधुनिक जीवन की आवश्यकता है और उससे दूरी बनाना न तो व्यावहारिक है और न ही सम्भव। समस्या उसके असन्तुलित उपयोग में है। यदि तकनीक साधन के बजाय हमारे समय और मानसिक शान्ति पर नियंत्रण करने लगे, तो रुककर सोचने की आवश्यकता होती है। प्रश्न यह नहीं है कि मोबाइल का उपयोग किया जाये या नहीं; प्रश्न यह है कि उसका उपयोग हमारी जरूरतों के

अनुसार हो रहा है या हमारी आदतों को नियंत्रित कर रहा है।

दरअसल, स्क्रीन टाइम कम करने का अर्थ केवल मोबाइल को कुछ घण्टों के लिये दूर रख देना नहीं है; इसका अर्थ है जीवन में सन्तुलन को वापस लाना। यह समझना कि डिजिटल दुनिया आवश्यक है, लेकिन वही सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन की सबसे मूल्यवान चीजें अब भी स्क्रीन के बाहर मौजूद हैं। मैदानों की ऊर्जा, किताबों की गहरायी, परिवार की निकटता, मित्रों की हँसी और प्रकृति की शान्ति आज भी उतनी ही वास्तविक हैं।

आज आवश्यकता किसी कठोर प्रतिबन्ध की नहीं, बल्कि आत्म अनुशासन और सजगता की है। हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना होगा कि क्या हम स्क्रीन का उपयोग कर रहे हैं, या स्क्रीन हमारे समय और ध्यान को नियंत्रित करने लगी है। यदि इसका उत्तर हमें थोड़ा भी असहज करता है, तो शायद बदलाव की शुरुआत का समय आ चुका है। क्योंकि एक सक्रिय, सन्तुलित और जागरूक युवा ही स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र की वास्तविक नींव रख सकता है। ●

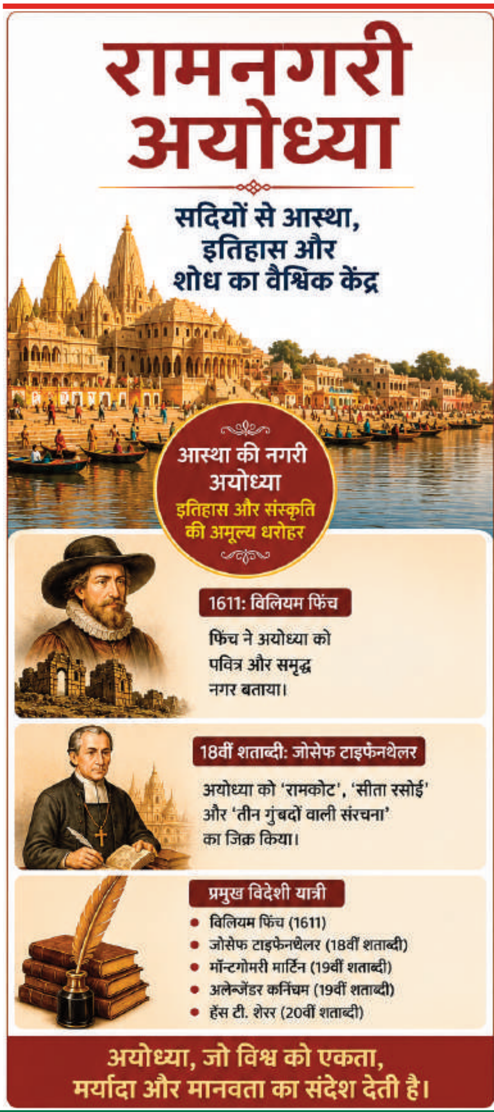

रामनगरी अयोध्या : सदियों से आस्था, इतिहास और शोध का वैश्विक केन्द्र

अयोध्या। श्रीराम मन्दिर निर्माण के बाद रामनगरी अयोध्या पूरी दुनिया के आकर्षण का केन्द्र बन गयी है। देश-विदेश से श्रद्धालु, पर्यटक, शोधकर्ता और इतिहासकार यहाँ पहुँच रहे हैं। हालाँकि अयोध्या का महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सदियों से यह नगरी इतिहास, संस्कृति और शोध का प्रमुख केन्द्र रही है। इतिहासविद् डॉ. प्रज्ञा मिश्रा के अनुसार 17वीं शताब्दी से लेकर आधुनिक काल तक अनेक विदेशी यात्रियों, विद्वानों और पुरातत्वविदों ने अयोध्या पहुँचकर यहाँ की पौराणिकता, धार्मिक परम्पराओं और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन किया। वर्ष 2019 में आये सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले में भी कई विदेशी यात्रियों और विद्वानों के यात्रा वृत्तान्तों का उल्लेख किया गया था। वर्ष 1611 में अंग्रेज यात्री विलियम फिंच अयोध्या पहुँचे थे। उन्होंने अपने विवरण में "रामचन्द्र के किले और महलों के खण्डहर" का उल्लेख करते हुए लिखा कि हिन्दू समाज इस स्थान को भगवान राम की जन्मस्थली मानता है। इसके बाद 18वीं शताब्दी में जेसुइट मिशनरी जोसेफ टाइफेनथेलर ने अपनी पुस्तक में 'रामकोट', सीता रसोई और तीन गुम्बदों वाली संरचना का जिक्र किया। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश इतिहासकार मोंटगोमरी मार्टिन और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक अलेक्जेण्डर कनिंघम ने भी अयोध्या का गहन अध्ययन किया। कनिंघम ने अयोध्या को चीनी यात्रियों फाहियान और युवान च्वांग द्वारा वर्णित प्राचीन 'साकेत' और 'विशाखा' से जोड़ा था। वहीं डच विद्वान हंस टी. ब्रेकर ने अपनी पुस्तक 'अयोध्या' में रामनगरी के इतिहास और संस्कृति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया।

बेटियों ने फतह की 18 हजार फिट ऊँची काला पत्थर चोटी

बलरामपुर की बेटियों ने हिमालय की दुर्गम वादियों में साहस और आत्मविश्वास की नयी मिसाल कायम की है। 'सशक्त बेटियाँ, सशक्त बलरामपुर' अभियान के तहत जिले की छात्राओं ने 18,192 फीट ऊँची काला पत्थर चोटी फतह कर जनपद का नाम रोशन किया है। अभियान के तहत सात मई को बलरामपुर से रवाना हुआ दल अब 12 दिन की कठिन ट्रैकिंग पूरी कर वापसी यात्रा पर है। हैण्डबॉल प्रशिक्षक हिना खातून के नेतृत्व में नीलांशु, प्रियंका उपाध्याय और प्रियंका प्रजापति ने नेपाल के लिये यात्रा शुरू की थी। काठमाण्डू पहुँचने के बाद दल ने लुकला से ट्रैकिंग शुरू की। अभियान के दौरान छात्राओं को तेज ठण्ड, बर्फीली हवाओं, पथरीले रास्तों और कम ऑक्सीजन जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और लगातार कई दिनों तक कठिन हिमालयी ट्रैक पार किया।

सामाजिक बिखराव से जूझते पश्चिमी देश

पश्चिमी देश सामाजिक अलगाव की समस्या से गम्भीर रूप से जूझ रहे हैं। वहाँ लोगों के बीच आपसी संवाद बहुत ही कम होता जा रहा है। मोबाइल फोन के इस युग में लोग एकाकी होते जा रहे हैं। स्थिति यहाँ तक बिगड़ गयी है कि ब्रिटेन में सार्वजनिक जीवन से जुड़े प्रमुख लोगों ने राष्ट्रीय संवाद परियोजना शुरू की है। लोगों से पूछा जा रहा है- जनता को कौन-सी चीजें जोड़ती हैं, कौन-सी बाँटती हैं, पड़ोसियों से जुड़ाव कैसे बढ़े और कौन-सी चीज देश को घर जैसा महसूस कराती है। इसके लिए सामुदायिक एकता और सामाजिक सौहार्द पर स्वतंत्र आयोग बना है। लोग कह रहे हैं कि ब्रिटेन के सामाजिक ताने-बाने और समुदाय की भावना को मजबूत करने की इतनी जरूरत पहले कभी महसूस नहीं हुई।

सामाजिक बिखराव का यह रुख अकेले ब्रिटेन में नहीं है। अमेरिका में भी पड़ोसियों के बीच बातचीत तेजी से घट रही है। एक रिपोर्ट कहती है कि तकनीक ने लोगों को आत्मनिर्भर तो बनाया, लेकिन सामाजिक रूप से अलग-थलग कर दिया। अब मनोरंजन, खरीदारी, पता पूछना, सलाह लेना ये सब काम मोबाइल स्क्रीन पर ही होते हैं। लोगों को किसी के दरवाजे पर दस्तक देने की जरूरत ही नहीं पड़ती। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी अकेलेपन और सामाजिक अलगाव को सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट मानने लगा है। उसके मुताबिक, सामाजिक दूरी सिर्फ मानसिक

तनाव नहीं, बल्कि दिल की बीमारी, अवसाद और असमय मृत्यु का जोखिम भी बढ़ाती है। दुनिया में हर पाँचवां व्यक्ति अक्सर अकेलापन महसूस करता है। पहले समाज परिवार, पड़ोस, धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों और स्थानीय समूहों से जुड़ा रहता था। अब दूरियाँ बढ़ी हैं।

भारत में भी स्थिति चिन्ताजनक

भारत में परिवार अब भी पश्चिमी देशों की तुलना में मजबूत माने जाते हैं लेकिन, शहरी जीवन, नौकरी के दबाव और मोबाइल-आधारित दिनचर्या से रिश्तों की प्रकृति बदल रही है। हेल्प एज इण्डिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, 69 प्रतिशत युवा और 68 प्रतिशत बुजुर्ग बुढ़ापे में अकेले पड़ने से डरते हैं। ये संकट सिर्फ बुजुर्गों का नहीं रहा। सबसे ज्यादा अकेलापन युवाओं में दिख रहा है। वे ऑनलाइन सबसे ज्यादा जुड़े हैं, लेकिन वास्तविक सामाजिक रिश्ते सबसे कमजोर हो रहे हैं।

कुटुम्ब प्रबोधन से हल होगी समस्या

विशेषज्ञ मामते हैं कि कुटुम्ब प्रबोधन से इस समस्या को दूर किया जा सकता है। यह कार्य हम सब अपने अपने परिवार से करें। सप्ताह में कम से कम एक दिन सब लोग साथ रहें। श्रद्धानुसार भजन करें, घर में ही बना भोजन करें। पूर्वजों की परम्परा पर चर्चा करें। अगर कुछ विपरीत हो तो उसे निकालें। हिन्दू धर्म और समाज को लेकर भी चर्चा होनी चाहिये। परिवार ही राष्ट्र की नींव है। अगर नींव मजबूत व संस्कारित रही तो हमारा राष्ट्र अक्षुण्ण रहेगा ही और विश्व का मार्गदर्शन भी करेगा। परिवार के कल्याणकारी बने रहने से देश और समाज का कल्याण होगा। आज परिवार व्यवस्था में काफी बदलाव आ चुका है और नई चुनौतियाँ पैदा हुई हैं। आधुनिक परिवेश में इनका सामना कैसे करें और परिवारों को सुखी एवं स्वस्थ कैसे बनाएँ, इस पर काम करना आवश्यक है।

खेतों में मजदूरी करने वाली नैना ने लन्दन में बढ़ाया देश का मान

बहराइच। हौसले बुलन्द हों तो गरीबी और संघर्ष भी सफलता की राह नहीं रोक सकते। रिसिया क्षेत्र के पटेल नगर गाँव की रहने वाली नैना ने यह साबित कर दिखाया है। खेतों में मजदूरी कर और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ायी पूरी करने वाली नैना ने अब अन्तरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनायी है। महिला सशक्तीकरण और बाल विवाह रोकने की दिशा में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिये उन्हें लन्दन में सम्मानित किया गया है।

● महिला सशक्तीकरण और बाल विवाह रोकने के प्रयासों के लिए मिला अंतरराष्ट्रीय सम्मान

नैना के पिता विजय बहादुर राजमिस्त्री हैं, जबकि माँ सोना देवी गृहिणी हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण नैना को पढ़ायी जारी रखने के लिए गाँव में मजदूरी करनी पड़ी। उन्होंने खेतों में काम किया और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपनी शिक्षा का खर्च उठाया। तमाम संघर्षों के बावजूद आर्थिक तंगी के चलते दसवीं के बाद उनकी पढ़ाई छूट गयी।

साल 2021 में नैना आगा खान फाउण्डेशन के 'प्रोजेक्ट लहर' से जुड़ीं। इस परियोजना का उद्देश्य कमजोर तबके की युवतियों को शिक्षित

और आत्मनिर्भर बनाना है। को-ऑर्डिनेटर सीमा शुक्ला के मार्गदर्शन में नैना को प्रशिक्षण मिला और संस्था ने उनकी आगे की पढ़ायी की जिम्मेदारी उठायी। इसके बाद उन्होंने इंटरमीडिएट और स्नातक की परीक्षा शानदार अंकों से उत्तीर्ण की।

खुद आत्मनिर्भर बनने के बाद नैना ने समाज में बदलाव लाने का संकल्प लिया। उन्होंने गाँव की 12 युवतियों की टीम बनायी और महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में काम शुरू किया। नैना अब 16 से 29 वर्ष की युवतियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

वैश्विक उथल-पुथल में भी स्थिर ग्रामीण परिवेश

भारत गाँवों का देश है। यही कारण है कि जब विश्व के कई देशों में आर्थिक मन्दी का दौर चलता है, तब भी भारत अपेक्षाकृत स्थिर बना रहता है। इसका प्रमुख कारण ग्रामीण भारत की वह जीवनशैली है, जो सदियों से प्रकृति और संसाधनों के सन्तुलित उपयोग पर आधारित रही है। देश का प्रत्येक गाँव किसी न किसी रूप में आत्मनिर्भर है। आज भले ही गैस सिलेण्डर, बिजली और आधुनिक सुविधाओं का उपयोग बढ़ गया हो, लेकिन महंगाई, प्राकृतिक आपदा, बेरोजगारी या आपूर्ति संकट जैसी कठिन परिस्थितियों में ग्रामीण भारत अब भी वैकल्पिक ईंधन और पारम्परिक संसाधनों के सहारे जीवन को सन्तुलित बनाये रखता है। यही आत्मनिर्भरता भारत की वास्तविक शक्ति है।

ग्रामीण समाज ने वर्षों से कम संसाधनों में जीवन चलाने की कला विकसित की है। ईंधन की बचत, संग्रह और वैकल्पिक साधनों का उपयोग केवल आर्थिक मजबूरी नहीं, बल्कि एक सामाजिक परम्परा भी रही है। आज जब ऊर्जा संकट और पर्यावरण संरक्षण की चर्चा बढ़ रही है, तब गाँवों की यह पारम्परिक समझ और अधिक प्रासंगिक दिखायी देती है।

पारम्परिक ईंधन

गाँवों में पहले मुख्य रूप से लकड़ी, उपले (गोबर के कण्डे), फसल अवशेष, सूखी पत्तियाँ और कृषि अपशिष्ट ईंधन के रूप में प्रयोग किये जाते थे। परिवार वर्ष भर इनका संग्रह करता था। महिलाएँ खेतों और बागों से सूखी लकड़ियाँ लाती थीं तथा गोबर से उपले बनाकर धूप में सुखाये जाते थे। यह केवल दैनिक काम नहीं बल्कि भविष्य की तैयारी मानी जाती थी। बरसात या कठिन समय में यही संचित ईंधन परिवार के काम आता था। कई गाँवों में आज भी घरों के बाहर या छप्पर के नीचे लकड़ी और उपलों का सुरक्षित भण्डारण देखने को मिलता है। यह ग्रामीण समाज की आत्मनिर्भर और बचत आधारित संस्कृति का हिस्सा है।।

वैकल्पिक ईंधन की उपयोगिता

जब बाजार में गैस सिलेण्डर महँगे हो जाते हैं या आपूर्ति बाधित होती है, तब ग्रामीण परिवार पारम्परिक ईंधनों की ओर लौट जाते हैं। यही कारण है कि गांवों में ऊर्जा संकट का प्रभाव शहरों की तुलना में कम दिखाई देता है। इससे ग्रामीणों को निम्नलिखित लाभ हैं-

आर्थिक राहत

लकड़ी, उपले और कृषि अवशेष स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होते हैं। इनके उपयोग से परिवारों का मासिक खर्च कम होता है। गरीब और सीमित आय वाले परिवारों के लिए यह बड़ी राहत है।

आत्मनिर्भरता

ग्रामीण समाज बाहरी संसाधनों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहता। खेत, पशुपालन और प्राकृतिक संसाधनों से ईंधन की आवश्यकता का एक बड़ा हिस्सा पूरा हो जाता है।

आपदा के समय सहारा

बाढ़, महामारी, बिजली कटौती या परिवहन संकट के समय वैकल्पिक ईंधन गाँवों में जीवन को सामान्य बनाये रखने में मदद करता है। खाने के लाले नहीं पड़ते। कहा जाता है चूल्हा जलता रहे तो परिवार का मनोबल भी बना रहता है।

पर्यावरणीय सन्तुलन

यदि नियंत्रित और सन्तुलित तरीके से उपयोग हो, तो जैविक ईंधन पर्यावरण के लिये अपेक्षाकृत कम हानिकारक हो सकता है। गोबर गैस और कृषि अपशिष्ट का वैज्ञानिक उपयोग प्रदूषण कम करने में सहायक है।

सामूहिक भोजन व्यवस्था

कई परिवार एक साथ भोजन बनाते थे जिससे ईंधन कम खर्च होता था। त्योहारों और आयोजनों में सामूहिक चूल्हे का उपयोग आज भी कई गाँवों में होता है।

मौसमी ईंधन संग्रह

गर्मी के मौसम में लकड़ी और उपलों का भण्डारण किया जाता है, जिसका प्रयोग पूरे साल होता है। फिर बरसात हो या भीषण ठण्ड परेशानी न हो। यह दूरदर्शिता ग्रामीण जीवन की बड़ी विशेषता रही है।

पुन: उपयोग की संस्कृति

फसल के डण्ठल, सूखी पत्तियाँ, भूसा और गन्ने की खोई तक का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता था। गाँवों में सभी चीजों के सुरक्षित उपयोग की परम्परा रही है।

बायोगैस संयंत्र

गोबर गैस ग्रामीण भारत के लिये अत्यन्त उपयोगी विकल्प है। पशुपालन वाले परिवार बायोगैस प्लांट लगाकर खाना पकाने का ईंधन तैयार कर सकते हैं। इससे लकड़ी की आवश्यकता कम होती है और जैविक खाद भी मिलती है।

सोलर ऊर्जा का उपयोग

सौर कुकर और सोलर लाइटें अब गाँवों में धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही हैं। धूप वाले क्षेत्रों में सौर ऊर्जा ईंधन खर्च घटाने का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

उन्नत चूल्हे

सरकार और कई सामाजिक संस्थाएँ धुआँ कम करने वाले उन्नत चूल्हों को बढ़ावा दे रही हैं। ये कम लकड़ी में अधिक गर्मी देते हैं तथा महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये भी बेहतर हैं। ●

एसआईआर प्रक्रिया संविधान के अनुरूप

चुनाव आयोग को मिला सुप्रीम कोर्ट का समर्थन

● कहा- मतदाता सूची की शुद्धता लोकतंत्र की बुनियाद

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में चल रही विशेष गहन मतदाता पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए चुनाव आयोग को बड़ी राहत दी है। चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया जस्टिस सूर्यकान्त की अध्यक्षता वाली बेंच ने स्पष्ट कहा कि यह प्रक्रिया जन प्रतिनिधित्व अधिनियम (RP Act) में "नई जान फूँकने" का काम करती है और इसका उद्देश्य मतदाता सूची को अधिक शुद्ध, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाना है।

अदालत ने कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव संविधान की मूल भावना का हिस्सा हैं और मतदाता सूची की शुद्धता उसी दिशा में एक आवश्यक कदम है। कोर्ट के अनुसार चुनाव आयोग को मतदाता सूची में सुधार और पुनरीक्षण के लिए विशेष गहन प्रक्रिया चलाने का अधिकार प्राप्त है।

तय किए थे तीन अहम सवाल

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार किया। पहला, क्या चुनाव आयोग को एसआईआर कराने का अधिकार है? दूसरा, क्या यह प्रक्रिया किसी वैध उद्देश्य पर आधारित है? और तीसरा, क्या इसके तहत अपनाये गये उपाय सन्तुलित और कानून के अनुरूप हैं?

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि संविधान के अनुच्छेद 324 और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 21(3) चुनाव आयोग को विशेष गहन पुनरीक्षण कराने का स्पष्ट अधिकार देते हैं। अदालत ने माना कि बिहार में बड़े पैमाने पर जनसंख्या परिवर्तन, शहरीकरण और प्रवासन के कारण मतदाता सूची में व्यापक बदलाव हुए हैं, जिसके चलते यह प्रक्रिया आवश्यक हो गयी थी।

संवैधानिक दायित्व पर जोर

सीजेआई सूर्यकान्त ने कहा कि चुनाव आयोग का उद्देश्य चुनावी प्रक्रिया की अखण्डता को सुरक्षित रखना और स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करना है। अदालत ने माना कि इसी संवैधानिक जिम्मेदारी के तहत आयोग ने बिहार से राष्ट्रव्यापी विशेष पुनरीक्षण अभियान शुरू करने का निर्णय लिया।

कोर्ट ने यह भी कहा कि एसआईआर प्रक्रिया

चुनावी व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में उठाया गया कदम है और यह संविधान के मूल ढाँचे के खिलाफ नहीं जाता। न्यायालय के अनुसार लोकतंत्र की मजबूती के लिये शुद्ध मतदाता सूची अनिवार्य है और चुनाव आयोग इस दिशा में कार्रवाई करने के लिये पूरी तरह अधिकृत है।

याचिकाकर्ताओं की दलीलें खारिज

मामले में याचिकाकर्ताओं ने दलील दी थी कि इतने बड़े स्तर पर एसआईआर कराना जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के खिलाफ है और इससे मतदाताओं के अधिकार प्रभावित हो सकते हैं। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इन तर्कों को खारिज करते हुए कहा कि चुनाव आयोग की प्रक्रिया कानून के दायरे में है और उसका उद्देश्य पूरी तरह वैध है।

अमेरिका का अनोखा कॉलेज : यहाँ पढ़ाई के साथ गायों की देखभाल और खेती भी सीखते हैं छात्र

अमेरिका के कैलिफोर्निया का एक छोटा-सा कॉलेज चर्चा का केन्द्र बना हुआ है, जहाँ छात्रों को सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि जीवन जीने के वास्तविक मूल्य सिखाये जाते हैं। वर्ष 1917 में स्थापित 'डीप स्प्रिंग्स कॉलेज' अमेरिका के कैलिफोर्निया में एक मवेशी फार्म के बीच संचालित होता है। यहाँ हर साल केवल 26 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को दो साल की लिबरल आर्ट्स शिक्षा पूरी तरह मुफ्त दी जाती है, लेकिन इसके बदले उन्हें कॉलेज संचालन की जिम्मेदारियों में सक्रिय भागीदारी निभानी होती है।

कोई छात्र गायों की देखभाल करता है, कोई खेतों में काम करता है, तो कोई भोजन व्यवस्था सम्भालता है। कुछ छात्र कॉलेज के ट्रस्टी बोर्ड और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भी हिस्सा लेते हैं। यहाँ तक कि

कुछ विद्यार्थी फायरफाइटर के रूप में आपात स्थितियों में मदद भी करते हैं।

जिम्मेदारी सिखाने पर जोर

'डीप स्प्रिंग्स कॉलेज' का मॉडल आधुनिक विश्वविद्यालयों से बिल्कुल अलग माना जा रहा है। आज अधिकांश बड़े संस्थानों में शिक्षा का उद्देश्य अच्छे अंक, मजबूत रिज्यूमे और बेहतर नौकरी तक सीमित हो गया है। छात्र कॉलेज को 'सर्विस प्रोवाइडर' और खुद को 'कस्टमर' की तरह देखने लगे हैं। इसके विपरीत, डीप स्प्रिंग्स कॉलेज सामुदायिक जीवन, जिम्मेदारी और संवेदनशीलता को शिक्षा का मूल हिस्सा मानता है। विशेषज्ञों का कहना है कि मशीनें और एआई भले कई तकनीकी काम सम्भाल लें, लेकिन रिश्तों और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना इंसानों को ही सीखनी होगी। कॉलेज की पूर्व छात्रा रेबेका मैकमिलिन-हैस्टिंग्स बताती हैं कि एक बार उन्हें घायल गाय के घाव की सफाई करनी पड़ी। उन्हें पता था कि इससे गाय को दर्द होगा, लेकिन इलाज जरूरी था। उनके अनुसार, ऐसे अनुभव युवाओं को जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का वह पाठ सिखाते हैं, जो केवल किताबों से नहीं सीखा जा सकता।

जनसहयोग से पुनर्जीवित हुई नून नदी, जालौन बना जल संरक्षण का मॉडल

बुन्देलखण्ड के सूखाग्रस्त जालौन जिले में विलुप्त होती नून नदी को जनसहयोग से नया जीवन देने की मिसाल पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। बिना सरकारी बजट और आर्थिक सहायता के जिले के प्रशासन, सामाजिक संगठनों, किसानों और आम नागरिकों के सामूहिक प्रयास से नून नदी फिर से बहने लगी है। इस नवाचार के लिए जालौन को देश में जल संरक्षण कार्यों के लिये तीसरा स्थान मिला और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने नवम्बर 2025 में जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय को राष्ट्रीय जल पुरस्कार से सम्मानित किया।

47 गाँवों की जीवनरेखा बनी नदी

नून नदी का उद्गम महेवा ब्लॉक के सतोह गाँव से होता है। करीब 82 किलोमीटर लम्बी यह नदी 47 ग्राम पंचायतों की लगभग 2780 हेक्टेयर भूमि को सिंचित करती हुई शेखपुर गुढ़ा गाँव के पास यमुना नदी में मिलती है। वर्ष 2014 की भीषण बाढ़ के बाद नदी में भारी कटान हुआ और धीरे-धीरे इसका स्वरूप बिगड़ने लगा। समय के साथ नदी सूखने लगी और अस्तित्व संकट में पहुँच गयी।

डीएम की पहल से शुरू हुआ पुनरोद्धार अभियान

जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने वर्ष 2024 में नदी पुनर्जीवन की विस्तृत रूपरेखा तैयार की। इसके बाद 13 अप्रैल 2025 को जल शक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह ने सतोह गाँव में फावड़ा चलाकर अभियान का शुभारम्भ किया। जल सहेलियों, समर्थ फाउण्डेशन, सामाजिक संगठनों, किसानों और स्थानीय नागरिकों ने अभियान में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभायी। करीब डेढ़ माह तक चले कार्य में 2000 से अधिक लोग शामिल रहे। लगातार श्रमदान और मशीनों की मदद से नदी की खोदाई हुई और जलधारा फिर बह निकली।

जल संरक्षण का बना जन आन्दोलन

नदी पुनर्जीवन के बाद 23 जुलाई 2025 को जिले में जल संरक्षण जनभागीदारी कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिलेभर में एक ही दिन 1850 जल पाठशालाएँ संचालित की गयीं और करीब साढ़े सात लाख लोगों ने जल संरक्षण की शपथ ली। ग्राम पंचायतों में वाटर बजटिंग प्रणाली लागू की गयी। साथ ही लगभग 400 तालाब और 300 छोटे-बड़े चेकडैम भी बनाये गये।

पहले भी हुई थी पहल

वर्ष 2023 में तत्कालीन जिलाधिकारी चाँदनी सिंह ने नून नदी की धारा को पुनर्जीवित करने का प्रयास शुरू किया था। नलकूपों की सहायता से नदी में पानी छोड़ा गया था, जिसकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में सराहना की थी। उसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने इसे जन आन्दोलन का रूप देकर सफलता हासिल की। जिले में खेतों की मेड़बन्दी, वाटर हार्वेस्टिंग और गोशालाओं में सीसीटीवी निगरानी जैसी पहल भी की गईं। कलेक्ट्रेट परिसर में पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देने के लिये पार्क विकसित किया गया और प्राचीन कुएं का पुनरोद्धार कराया गया।

गीता के श्लोकों से बच्चों को मिला संस्कार और आध्यात्मिक ज्ञान

लखनऊ। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ (इस्कॉन) द्वारा आयोजित किड्स समर कैम्प का पहला भक्ति, संस्कार और उत्साह के माहौल में सम्पन्न हुआ। मन्दिर अध्यक्ष अपरिमेय श्याम प्रभु के निर्देशन और उनकी धर्मपत्नी अचिंत्य रूपिणी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कैम्प में बच्चों ने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़कर कई प्रेरणादायक गतिविधियों में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री श्री राधारमण बिहारी जी के दिव्य दर्शन और हरे कृष्ण महामंत्र कीर्तन से हुई। कीर्तन के दौरान बच्चे पूरे उत्साह के साथ भक्ति में झूमते नजर आये। मन्दिर परिसर भक्तिमय माहौल से गूँज उठा। बच्चों को ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी श्रील प्रभुपाद जी का प्रणाम मंत्र भी सिखाया गया। कैम्प में बच्चों को श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय के छठे श्लोक का सरल भाषा में अर्थ समझाया गया।

आयोजकों ने बताया कि गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली प्रेरणा है। "भगवान कौन हैं" विषय पर आयोजित विशेष सत्र में बच्चों को भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य गुणों, प्रेम, करुणा और भक्ति का महत्व बताया गया। बच्चों ने सवाल पूछकर अपनी जिज्ञासाएँ भी दूर कीं। समर कैम्प में आध्यात्मिक शिक्षा के साथ मनोरंजक खेल भी आयोजित किये गये। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को टीम वर्क, अनुशासन और सकारात्मक सोच का सन्देश दिया गया। अभिभावकों ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों को मोबाइल और डिजिटल दुनिया से दूर कर संस्कारों से जोड़ते हैं। कार्यक्रम के अन्त में बच्चों को प्रसादम वितरित किया गया।

● डॉ. अविनाश

ग्रीष्म ऋतु में अचूक आयुर्वेद उपचार

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें अति तीव्र हो जाती है। तापमान बढ़ने से शरीर में पित्त दोष का प्रभाव प्रबल हो जाता है जिससे थकान, प्यास, जलन, त्वचा रोग एवं पाचन सम्बन्धी विकार उत्पन्न होते हैं। आधुनिक जीवन शैली में एयर कण्डीशन, फास्ट फूड और तनाव ने इन समस्याओं को और बढ़ा दिया है। आयुर्वेद हमें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने के सरल उपाय सिखाता है।

ग्रीष्म ऋतु में आहार

ग्रीष्म में आहार पित्त को शान्त करने वाला हो जैसे- मीठा, शीतल और जलयुक्त

आयुर्वेद कहता है कि **हिमशीतलं मधुरं सलिलं च**। ठण्डा, मीठा और वल प्रधान पानी पिये।

फल : तरबूज, खरबूजा, नारियल पानी, अनार

सब्जियाँ : खीरा, कद्दू, पखल, लोकी

अनाज : पुराना चावल, जौ, मूँग दाल

पेय : छाछ, गुलकंद का शरबत, सौ० पुदीना शटरब, नीबू पानी

दुग्ध : दही, घी, दूध

निषिद्ध आहार : तीखा, खट्टा

नमकीन : मिर्च, अचार, पापड़

तला भुना : चिप्स, समोसा, फ्राई फूड

गर्म पदार्थ : चाय, काफी, शराब

मांसाहार : विशेषकर मांसाहार

दिनचर्या :-

जागरण : सूर्योदय से पहले

स्नान : ठण्डे जल से, नारियल तेल, या चन्दन के लेप से

व्यायाम : शीतली प्राणायाम, चंन्द्रनमस्कार, जोरदार व्यायाम न करें।

निद्रा : 10 बजे से सोये, अधिकतम 6 घण्टे की नींद लें।

ग्रीष्म विशेष नियम

दोपहर 11 से 3 बजे तक बाहर न निकले, एसी का उपयोग कम करें, यात्रा कम करें।

प्रमुख ओषधियाँ

चन्द्रकला रस, प्रवाल पिष्टी, शतावरी चूर्ण, आमलकी रसायन

धान की जड़ों में मिला प्राकृतिक सुरक्षा कवच, अब दानों तक नहीं पहुँचेगा आर्सेनिक

लखनऊ। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) के वैज्ञानिकों ने चावल को आर्सेनिक मुक्त बनाने की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। वैज्ञानिकों ने धान की जड़ों में मौजूद एक विशेष प्रोटीन की पहचान की है, जो मिट्टी में मौजूद हानिकारक आर्सेनिक को जड़ों में ही रोक देता है और उसे चावल के दानों तक पहुँचने से रोकता है। इस खोज के बाद भविष्य में आर्सेनिक मुक्त धान की किस्में विकसित करने का रास्ता खुल गया है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित होंगी।

जड़ों में ही रुक जाएगा आर्सेनिक

एनबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देबाशीष चक्रवर्ती के नेतृत्व में किये गये शोध में पाया गया कि धान में मौजूद विशेष प्रोटीन "ओएसईएलपी" प्राकृतिक फिल्टर की तरह काम करता है। यह प्रोटीन धान की जड़ों के बाहरी हिस्से में आर्सेनिक को रोक देता है, जिससे वह पौधे के तने, पत्तियों और अन्ततः चावल के दानों तक नहीं पहुँच पाता। वैज्ञानिकों के अनुसार, इससे चावल में आर्सेनिक की मात्रा लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। इस शोध को अन्तरराष्ट्रीय जर्नल प्लान्ट, सेल एण्ड एनवायरनमेंट में प्रकाशित किया गया है। शोध दल में खुशबू चावड़ा, डॉ. वसीम सिद्दीकी, डॉ. दीपाली श्रीवास्तव, डॉ. मधु तिवारी, डॉ. सोनिक अंतो और डॉ. सौमित कुमार बेहरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

स्वास्थ्य के लिए बड़ा खतरा आर्सेनिक

विशेषज्ञों के अनुसार आर्सेनिक युक्त चावल का लगातार सेवन शरीर के लिए बेहद खतरनाक होता है। इससे कैंसर, किडनी और लिवर सम्बन्धी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग और रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने जैसी समस्याएँ भी पैदा हो सकती हैं। बच्चों में मानसिक और शारीरिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

पशुओं तक भी पहुँचता था जहर

अब तक धान के पुआल से बने चारे के जरिये आर्सेनिक पशुओं के रक्त और दूध तक पहुँच जाता था। नयी खोज के बाद आर्सेनिक पौधे की जड़ों में ही रुक जायेगा और तने व पत्तियों तक नहीं पहुँच पायेगा। इससे पशुओं को सुरक्षित चारा मिलेगा और दूध में आर्सेनिक कम होगा।

एनबीआरआई के निदेशक डॉ. अजीत कुमार शासनी ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी की मदद से हुई यह खोज खाद्य सुरक्षा और टिकाऊ कृषि की दिशा में बड़ा कदम है। इससे भविष्य में करोड़ों लोगों को सुरक्षित चावल उपलब्ध कराने और पर्यावरण अनुकूल खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

वैदिक पेंट : स्वच्छ पर्यावरण की ओर सार्थक पहल

आज का युग आधुनिकता, तकनीक और सुविधाओं का युग है। हर व्यक्ति अपने घर को सुन्दर, आकर्षक और आधुनिक बनाने की कोशिश करता है। घर की सजावट में पेंट की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रंग-बिरंगे और चमकदार पेंट घर की खूबसूरती को बढ़ाते हैं, लेकिन अक्सर हम यह नहीं सोचते कि इन पेंटों का हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। अधिकांश रासायनिक पेंटों में ऐसे तत्व होते हैं जो धीरे-धीरे हमारे जीवन और प्रकृति दोनों को नुकसान पहुँचाते हैं। ऐसे समय में वैदिक पेंट एक सुरक्षित, प्राकृतिक और टिकाऊ विकल्प के रूप में उभरकर सामने आया है।

रसायन पेंट से बढ़ती समस्याएँ

जब से लोगों ने कच्चे मकानों की जगह पक्के मकान बनाना शुरू किया, तब से घरों को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के पेंट का उपयोग बढ़ता गया। बाजार में उपलब्ध अधिकांश पेंट रासायनिक पदार्थों से तैयार किये जाते हैं। इन पेंटों में मौजूद कई रसायन हवा में घुलकर घर के वातावरण को प्रभावित करते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे पेंटों से निकलने वाले रसायन एलर्जी, आँखों में जलन, सिरदर्द, त्वचा रोग और सांस सम्बन्धी समस्याओं का कारण बन सकते हैं। बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों पर इनका प्रभाव और अधिक पड़ता है। पर्यावरण को होने वाले नुकसान को देखते हुए बाद में कुछ ईको-फ्रेंडली पेंट भी बाजार में आये, लेकिन उनमें भी रासायनिक तत्व पूरी तरह समाप्त नहीं हो सके।

स्वास्थ्य के लिए क्यों है बेहतर?

लोग अपने घरों में स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण चाहते हैं। वैदिक पेंट इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसमें ऐसे रसायन नहीं होते जो हवा को प्रदूषित करें या स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालें। इसकी प्राकृतिक संरचना घर के अन्दर की वायु गुणवत्ता को बेहतर बनाये रखने में मदद करती है। साथ ही इसमें बैक्टीरिया और फंगस के विकास को रोकने की क्षमता भी बतायी जाती है। इससे घर का वातावरण अधिक स्वच्छ और स्वस्थ बना रहता है। जिन परिवारों में छोटे बच्चे, बुजुर्ग या श्वास सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित लोग हैं, उनके लिये यह एक बेहतर विकल्प है।

क्या है वैदिक पेंट?

वैदिक पेंट भारतीय परम्परा और आधुनिक विज्ञान का अनूठा संगम है। यह मुख्य रूप से गाय के गोबर तथा अन्य प्राकृतिक तत्वों से तैयार किया जाता है। भारतीय संस्कृति में सदियों से गोबर का उपयोग घरों की सफायी और पुतायी के लिये किया जाता रहा है। गाँवों में आज भी गोबर से लीपे गये घर स्वच्छ, ठण्डे और अपेक्षाकृत कीटाणु मुक्त माने जाते हैं। इसी पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर वैदिक पेंट तैयार किया गया है। यह पूरी तरह प्राकृतिक, पर्यावरण अनुकूल और स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित माना जाता है। इसमें किसी प्रकार के जहरीले या हानिकारक रसायनों का प्रयोग नहीं किया जाता।

हर मौसम में लाभदायक

वैदिक पेंट केवल दीवारों को रंगने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह घर के तापमान को संतुलित रखने में भी सहायक माना जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार यह गर्मी के मौसम में बाहरी ताप को अन्दर आने से काफी हद तक रोकता है। इससे घर अपेक्षाकृत ठण्डा रहता है और एयर कण्डीशनर या कूलर का उपयोग कम करना पड़ सकता है। सर्दियों में भी यह घर के भीतर की गर्माहट बनाए रखने में मदद करता है। इसके अलावा यह दीवारों में नमी और सीलन की समस्या को कम करने में सहायक हो सकता है। परिणामस्वरूप फफूँदी और बदबू जैसी समस्याओं से भी राहत मिलती है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

वैदिक पेंट इसी सोच को मजबूत करता है। यह पूरी तरह जैव- अवक्रमणीय (बायोडिग्रेडेबल) है, अर्थात समय के साथ यह प्राकृतिक रूप से मिट्टी में मिल सकता है और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाता। इसके निर्माण की प्रक्रिया भी अपेक्षाकृत कम प्रदूषणकारी मानी जाती है। यही कारण है कि इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जा रहा है।

कई लोगों को लगता है कि प्राकृतिक उत्पाद महँगे होते हैं, लेकिन वैदिक पेंट अपेक्षाकृत किफायती विकल्प के रूप में भी सामने आया है। आज यह बाजार में विभिन्न रंगों और स्वरूपों में उपलब्ध है। आधुनिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इसके उत्पादन और गुणवत्ता में लगातार सुधार किया जा रहा है। इसके टिकाऊ होने के कारण लम्बे समय तक इसका लाभ प्राप्त किया जा सकता है। ●

कौवे और उल्लू के बैर की कथा

एक बार हंस, तोता, बगुला, कोयल, चातक, कबूतर, उल्लू आदि सब पक्षियों ने सभा करके यह सलाह की कि उनका राजा वैनतेय केवल वासुदेव की भक्ति में लगा रहता है; व्याधों से उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं करता; इसलिये पक्षियों का कोई अन्य राजा चुन लिया जाय। कई दिनों की बैठक के बाद सब ने सर्व सम्मति से सर्वाङ्ग सुन्दर उल्लू को राजा चुना।

अभिषेक की तैयारियाँ होने लगीं, विविध तीर्थों से पवित्र जल मँगाया गया, सिंहासन पर रत्न जड़े गये, स्वर्णघट भरे गये, मङ्गल पाठ शुरु हो गया, ब्राह्मणों ने वेद पाठ शुरु कर दिया, नर्तकियों ने नृत्य की तैयारी कर लीं; उलूकराज राज्यसिंहासन पर बैठने ही वाले थे

कि कहीं से एक कौवा आ गया। कौवे ने सोचा यह समारोह कैसा? यह उत्सव किस लिये ? पक्षियों ने भी कौवे को देखा तो आश्चर्य में पड़ गये। उसे तो किसी ने बुलाया ही नहीं था। फिर भी, उन्होंने सुन रखा था कि कौआ सब से चतुर कूटराजनीतिज्ञ पक्षी है; इसलिये उस से मन्त्रणा करने के लिये सब पक्षी उसके चारों ओर इकट्ठे हो गये।

उलूक राज के राज्याभिषेक की बात सुन कर कौवे ने हँसते हुए कहा- यह चुनाव ठीक नहीं हुआ। मोर, हंस, कोयल, सारस, चक्रवाक, शुक आदि सुन्दर पक्षियों के रहते दिवान्ध उल्लू और टेढ़ी नाक वाले अप्रियदर्शी पक्षी को राजा बनाना उचित नहीं है। वह स्वभाव से ही रौद्र है और कटुभाषी है। फिर अभी तो वैनतेय राजा बैठा है। एक राजा के रहते दूसरे को राज्यासन देना विनाशक है। पृथ्वी पर एक ही सूर्य होता है; वही अपनी आभा से सारे संसार को प्रकाशित कर देता है। एक से अधिक सूर्य होने पर प्रलय हो जाती है। प्रलय में बहुत से सूर्य निकल जाते हैं; उन से संसार में विपत्ति ही आती है, कल्याण नहीं होता। राजा एक ही होता है। उसके नाम-कीर्तन से ही काम बन जाते हैं। यदि तुम उल्लू जैसे नीच, आलसी, कायर, व्यसनी और पीठ पीछे कटुभाषी पक्षी को राजा बनाओगे तो नष्ट हो जाओगे।

कौवे की बात सुनकर सब पक्षी उल्लू को राज-मुकुट पहनाये बिना चले गये। केवल अभिषेक की प्रतीक्षा करता हुआ उल्लू उसकी मित्र कृकालिका और कौवा रह गये। उल्लू ने पूछा- मेरा अभिषेक क्यों नहीं हुआ?

कृकालिका ने कहा- मित्र! एक कौवे ने आकर रंग में भंग कर दिया। शेष सब पक्षी उड़कर चले गये हैं, केवल वह कौवा ही यहाँ बैठा है। तब, उल्लू ने कौवे से कहा- दुष्ट कौवे! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था जो तूने मेरे कार्य में विघ्न डाल दिया। आज से मेरा तेरा वंश परम्परागत बैर रहेगा। यह कहकर उल्लू वहाँ से चला गया। कौवा बहुत चिन्तित हुआ वहीं बैठा रहा। उसने सोचा- मैंने अकारण ही उल्लू से बैर मोल ले लिया। दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप करना और कटु सत्य कहना भी दुःखप्रद होता है। यही सोचता-सोचता वह कौवा वहाँ से चला गया। तभी से कौओं और उल्लुओं में स्वाभाविक बैर चला आता है।

शिक्षा : जहाँ पर आवश्यकता न हो वहाँ पूछने पर भी सलाह नहीं देनी चाहिये।

जय हे! जय हे!
जय हे तेरी!

जय हे! जय हे! जय हे तेरी!
सुन्दर सुभग सुहागिनि माँ!
शुभ्र मुकुट हिम माथे शोभित
सागर लहरें नित पग धोवत,
गंगा यमुना, सिन्धु, नर्मदा-
जयमाला बन मन को मोहत,
शस्य श्यामला षट्-ऋतु वाली
हरा भरा तव कानन माँ।। 1।।

आदि पुरुष मनु के पुत्रों की,
वेदों की वरदानी वाणी,
अष्ट सिद्धि नवनिधियों वाली,
अन्नदायिनी जग-कल्याणी,
नीरज नयना, धनवन बसना
शरदुज्ज्वल चन्द्रानन माँ।। 2।।

शीश अनेकों झुके चरण में
आशिष माँगें पड़े शरण में,
तेरी कीर्ति पताका माता
ऊँची फहरे नील गगन में,
तेरा मंगलमय शुभ मन्दिर
हो जग वन्दित भारत माँ।। 3।।

तन-मन-धन और निज जीवन से
निशि-दिन के क्षण-क्षण चिन्तन से
अक्षय दीप जलायें माता
विकसित नव जीवन, यौवन से
ज्योतित कर दे, आशा भर दे!
कण-कण में अति पावन माँ।। 4।।

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा-ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

04 जून	त्रिभुवन संकष्टी
07 जून	अधिक भानु सप्तमी
08 जून	अधिक कालाष्टमी, अधिक मासिक कृष्ण जन्माष्टमी
11 जून	परम एकादशी
12 जून	परम एकादशी पारण, अधिक कृष्ण रामलक्ष्मण द्वादशी, शुक्र प्रदोष व्रत
13 जून	मासिक कार्तिगाई, अधिक मासिक शिवरात्रि
14 जून	रोहिणी व्रत, अधिक दर्श अमावस्या
15 जून	ज्येष्ठ अधिक मास समाप्त, मिथुन संक्रान्ति, ज्येष्ठ अधिक अमावस्या

स्मरणीय तिथियाँ

01 जून (पुण्यतिथि)	स्वामीनारायण (सहजानंद स्वामी)
02 जून (जयन्ती)	बाबूलाल गौर
02 जून (पुण्यतिथि)	श्रीराम शर्मा आचार्य जी
03 जून (जयन्ती)	बालकृष्ण भट्ट
04 जून (पुण्यतिथि)	अभिमन्यु अनत
09 जून (पुण्यतिथि)	बिरसा मुण्डा
09 जून (बलिदान दिवस)	बन्दा वैरागी
10 जून (विजय दिवस)	राजा सुहेलदेव
11 जून (जयन्ती)	राम प्रसाद बिस्मिल
12 जून (जयन्ती)	ई. श्रीधरन 'मेट्रो मैन'
12 जून (पुण्यतिथि)	गोपीनाथ कविराज
12 जून (बलिदान दिवस)	बाबा साहब नरगुन्दर
13 जून (बलिदान दिवस)	राजा बलभद्र सिंह चहलारी
13 जून (पुण्यतिथि)	मेजर मनोज तलवार, नानक भील, कवयित्री कीर्ति चौधरी
14 जून (जयन्ती)	सतीश चंद्र दासगुप्ता
15 जून (पुण्यतिथि)	शिव दयाल साहब

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-
आन्तरिक डर में वृद्धि होगी। क्रोध में वृद्धि होगा। मनोबल में वृद्धि होगी। पेट की आन्तरिक समस्या में वृद्धि होगी। प्रतियोगिता में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बढ़ेगी।

वृषभ राशि-
धन सम्बन्धित कार्यों में प्रगति होगा। पारिवारिक कार्यों में सकारात्मकता आएगी। सरकारी तंत्र-तंत्र से लाभ, सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सुख में वृद्धि

मिथुन राशि-
मनोबल में सकारात्मकता बढ़ेगी। आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी। आँखों की समस्या पर खर्च बढ़ेगा । घबराहट एवं सीने की समस्या समस्या में वृद्धि होगी। वाहन पर खर्च बढ़ेगा। शत्रु पराजित होंगे।

कर्क राशि-
नौकरी, व्यवसाय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा खर्च में एवं भोग विलासिता में वृद्धि होगी। पैर में चोट या दर्द बढ़ेगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी।

सिंह राशि-
आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। सरकारी तंत्र से लाभ प्राप्त होगा। सीने की तकलीफ में वृद्धि होगी। सर्दी, खाँसी, एलर्जी अथवा बीपी की समस्या में वृद्धि हो सकती है। वाणी की तीव्रता में वृद्धि हो सकती है।

कन्या राशि-
सामाजिक पद प्रतिष्ठा सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी तथा व्यवसाय में परिवर्तन एवं प्रगति होगा। घर, गाड़ी, मकान का सुख प्राप्त होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी।

तुला राशि-
कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। क्रोध में वृद्धि होगा। सन्तान को लेकर चिन्ता होगी। कलात्मक कार्यों में वृद्धि होगी। वाणी व्यवसाय में वृद्धि होगी। पेट एवं पैर की समस्या

वृश्चिक राशि-
धन सम्बन्धित कार्यों में प्रगति होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। प्रतियोगी परीक्षा में विजय एवं शत्रु पराजित होंगे। सीने की तकलीफ को लेकर चिन्ता बढ़ेगी।

धनु राशि-
मानसिक तनाव बढ़ेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी। सन्तान को लेकर प्रसन्नता बढ़ेगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। माता को चोट अथवा ऑपरेशन सम्भव। नौकरी तथा व्यवसाय में उन्नति होगा।

मकर राशि-
वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। क्रोध में वृद्धि होगी। प्रोपर्टी का लाभ प्राप्त होगा। पद, प्रतिष्ठा एवं वाहन का लाभ प्राप्त होगा। अति घनिष्ठ व्यक्ति से तनाव बढ़ेगा। यात्रा खर्च में वृद्धि होगी। प्रेम सम्बन्ध में तनाव सम्भव।

कुम्भ राशि-
वाणी व्यवसाय में वृद्धि होगी। कलात्मक कार्यों में वृद्धि होगी। मानसिक तनाव में वृद्धि होगी। सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। आय के नए साधन बनेंगे। कार्य क्षेत्र में तनाव बढ़ेगा।

मीन राशि-
वाणी व्यवसाय में वृद्धि होगी। धन सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि में वृद्धि होगी। प्रोपर्टी का लाभ प्राप्त होगा। जीवन साथी से लाभ प्राप्त होगा। यात्रा खर्च में वृद्धि होगी। साझेदारी के कार्यों से लाभ होगा।

श्रीराम मन्दिर परिसर में नवनिर्मित दुर्गा मन्दिर की झलक